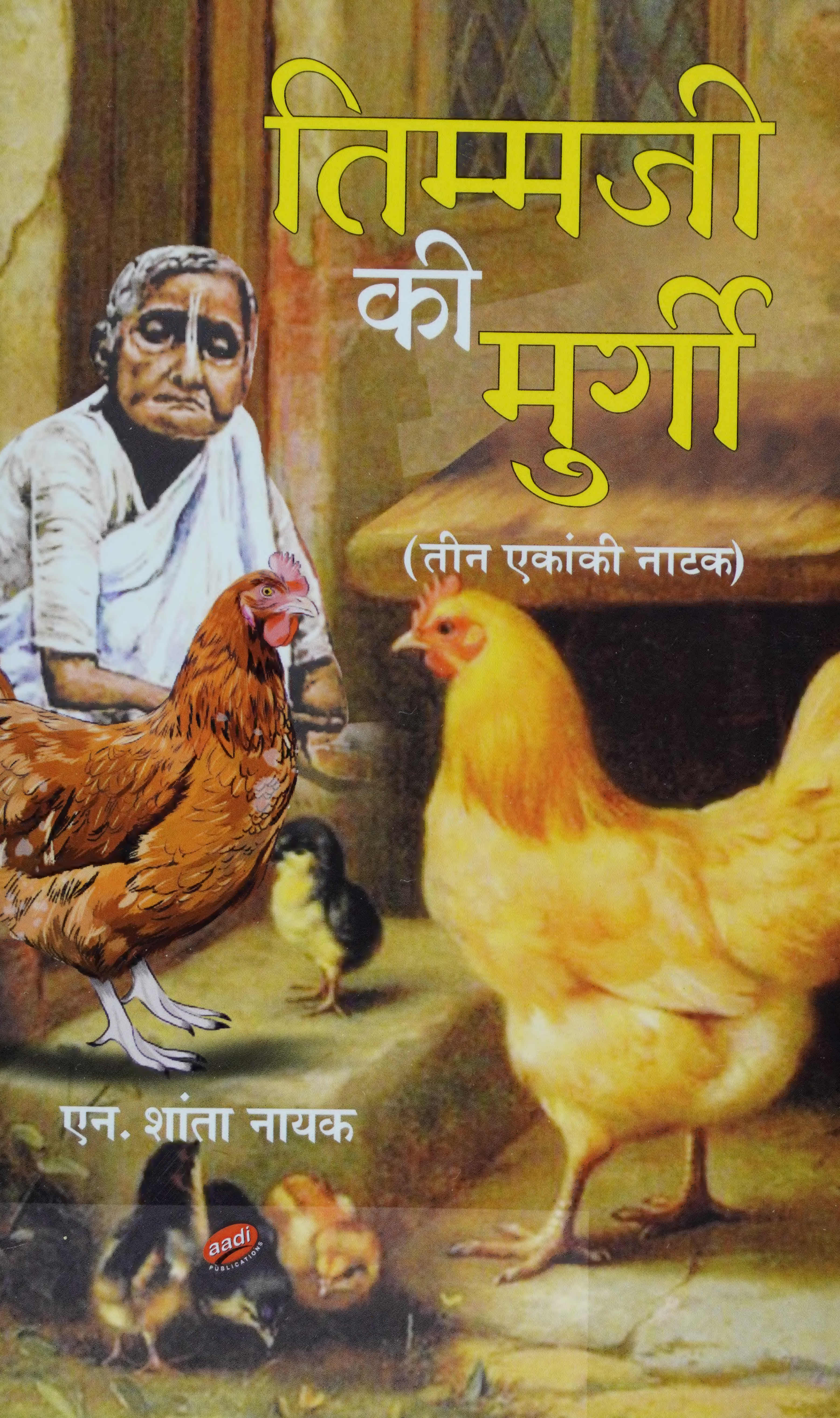
तिम्मजी की मुर्गी

(तीन एकांकी नाटक)



एन. शांता नायक

aadi PUBLICATIONS

तिम्मजी की मुर्गी

तिम्मजी की मुर्गी

एन. शांता नायक

aadi PUBLICATIONS

आदि पब्लिकेशन्स

जयपुर भारत

प्रकाशक

आदि पब्लिकेशन्स

एफ-11, एस.एस. टॉवर, धामाणी स्ट्रीट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003
फोन: 0141-2311900, 9414443132
ई-मेल: aadipublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022

आई.एस.बी.एन. : 978-81-952501-7-2

मूल्य : ₹ 125.00

साज-सज्जा
विक्रम कुमार शर्मा, जयपुर

मुद्रक
ट्राइडेंट एन्टरप्राइसेज, नोएडा

भूमिका

शांता नायक कन्नड़ साहित्य में खासे लोकप्रिय और समर्थ-सार्थक लेखक हैं। कविता से लेकर आलोचना और पद्यबद्ध आत्मकथा 'बंजारा' हिंदी में मेरे जानिब घुमंतू आदिवासी बंजारा जनजाति की पहली आत्मकथा है और खासी चर्चित भी है। दो उपन्यास 'टांडा' एवं 'मल्हाण' कन्नड़ के अलावा तेलुगु में अनुवादित हैं और हिंदी में अनुवाद की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

'तिम्मजी की मुर्गी' शीर्षक से लेखक की पहली व्यंग्य नाट्य पुस्तक है। 'प्रेतवन' 'तिम्मजी की मुर्गी' और 'मैं कब की बिक चुकी हूँ ...' तीन लघु आकार के व्यंग्य नाटक जैसे समूचे भारत और विश्व के राजनीतिक-सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को ग्रामीण नायक-नायिका के माध्यम से शब्दों में उकेर देते हैं। ये रचनाकार की वैचारिक परिपक्वता और लोक के साथ उनके प्रतिबद्ध जुड़ाव को दिखाती है। तीनों नाटक के कथानक भले ही देखने में अलग से दिखें पर लोक समस्याओं की भीषणता के अन्तःजुड़ाव और परदुख अभिव्यक्ति में लेखक की कुशलता को सामने लाती है। अन्याय के स्वरुप का ग्लोबल से लोकल तक का विश्लेषण सभी नाटकों को विलक्षण बना देता हैं। ऐसा लगता है शांता नाइक का लेखन भारतीय जातिवादी समाज के गहरे और दहकते अंगार-अनुभव से उपजा है बना है। उम्मीद करता हूँ ये नाटक कन्नड़ साहित्य के लिए मील का पत्थर साबित होंगे। घुमंतू आदिवादी बंजारा जनजाति के लेखक का लेखन में ये मुकाम हांसिल कर लेना वाकई बहुतों के लिए एक मिसाल है।

सूरज बडत्या

विषय सूची

प्रेतवन

इफेक्ट	:	आँधी - प्रेतों का शोर - भयानक संगीत (फेड़ इन)
प्रेत ध्वनि-1	:	(स्वागत) जब मैं अपनी माँ के पेट में थी तभी मैंने माँ के मुँह से सुना था कि यह मेरा न देखा हुआ संसार बहुत बड़ा है और सुंदर है। ऐसा संसार के देखने के पहले ही मैं मुरझा... गयी।
प्रेत ध्वनि-2	:	हे शैतान, ज्यादा बको मत, जमीन पर मेरा बेटा सोया हुआ है, मेरा प्यारा बच्चा। तेरी बातों से उसकी नींद में बाधा पड़ेगी न?
प्रेत ध्वनि-1	:	(कुपित होकर) अरे, मनुष्य जन्म की बू अभी तुमसे गई नहीं है। अब तुम शैतान हो। मनुष्यों के जैसे गालियाँ मत दो। सुनो, तुम इस प्रकार अधिकार चलाओ मत। तेरी बातें सुनने के लिए मैं तेरी माँ नहीं हूँ, समझे? (दुख ... स्वगत) पति और सांस की बातों में क्या आई, उन्होंने मुझे इस पाप-कूप में डाल दिया है। अब मैं किसी की बात सुनने वाली नहीं हूँ। उन्हें मैं आसानी से छोड़ने वाली नहीं हूँ।
प्रेत ध्वनि-2	:	चुप रह, यों क्यों मेंढ़क के जैसे बट्-बट् करती हो? ओह! शायद लगता, है कि तुम जन्मते ही --- बात सीखने के पहले ही मर गई हो। वहाँ जो बातें करना चाहती थी यहाँ करने जा रही हो।

----- तुम्हसे उतावलेपन को देखने से मुझे ऐसा लगता है ------

प्रेत ध्वनि-3 : कौन हैं जो झगड़े में लगे हैं? जिन्दगी भर काम कर करके तंग आकर यहाँ आयी हूँ। यहाँ भी शुरू कर रही हो अपना पुराना किस्सा?

प्रेत ध्वनि-1 : (हँसते हुए) हे बूढ़े, हम झगड़ेंगे तो तेरा क्या बिगड़ेगा? इस धरती पर झगड़े तो नए नहीं हैं। हजारों झगड़े चलते ही रहते हैं। अब उनसे हमारा कोई नाता नहीं है। नाता यदि होने पर भी क्या कर सकते हैं भला।

प्रेत ध्वनि-2 : संसार के बारे में कुछ भी नहीं जानने वाली तुम इस संसार के बारे में यों भाषण झाड़ रही हो। संसार के रीति-रिवाजों को तुम से ज्यादा मैं जानती हूँ। सुनो तो :-

प्रेत ध्वनि-3 : अच्छा आप लोग चुप रहें - आपके बरताव ऐसे हैं जैसे प्रजा सत्ता में नेताओं के झगड़े। पेड़ की टहनियों पर झूलते हुए अपनी-अपनी आप बीती कहानियाँ सुनाइए तो-

प्रेत ध्वनि-1 : हमारी कौन-सी बड़ी कहानी है- इस भूमि पर औरत का मतलब है त्रिशंकु सा जीने वाली। भोग के लिए—काम करने के लिए—नौकरी-चाकरी करने के लिए वह चाहिए और जब रहेगी जिंदा उसे त्रिशंकु स्वर्ग दिखाकर लंबी-चौड़ी कहानियाँ लिख मार रहे हैं—उसकी प्रशंसा कर करके...।

प्रेत ध्वनि-3 : देखो, हर बात पर स्कूल मास्टर के जैसे बुद्धिमानी की बातें मत करो, समझी? वे सारी बातें भूमि पर मनुष्य के साथ जन्मी हैं। नए ढंग से न सोचने वाले ये लोग बार-बार उन्हीं बातों की चारों ओर चक्कर लगाते हुए ऐसी बातें करते हैं जिन्हें सुनते मन ऊब जाता है— है न?

प्रेत ध्वनि - 2 : वह सृष्टिकर्ता हम जैसे पिशाचों को जो अमानत दी है वह है केवल बातें। मनुष्य के रूप में जब हम रहते हैं तब इन बातों का मर्म न जानकर, इसका बेमतलब अर्थ लगाकर अपना जीवन ही बिगाड़ लेते हैं, पिशाच बन जाते हैं।

प्रेत ध्वनि-1 : अब बस करो तो। तुम्हारी बेजान और सूखी बातें सुनकर ... अच्छा, अब मैं अपनी बात शुरू करती हूँ, सुन लो तो। औरत की प्रशंसा कर करके जीते जी उसे पिशाच बना देते हैं संसार के लोग...।

प्रेत ध्वनि-3 : संसार का उदय जब से हुआ तब से हमारा क्या काम रहा, बताओ तो? पुरुष जो भी कहता है उसे मुँह बंद करके सुनता और वह जो मना करता है उसका निराकरण करना ... जब नहीं बनता है तो उसके हाथ की कठपुतली के कैसे नाचना ... हूँ ...! (लंबी साँस लेकर) सुनाओ, तुम्हारी कहानी मेरी कहानी से भिन्न न होगी ...।

प्रेत ध्वनि-1 : मेरी कहानी तो खास नहीं है, मामूली है। बाप को लड़का चाहिए और दादी को पोता। माँ कैसे पैदा करेगी बताओ।

प्रेत ध्वनि-2 : मैं तो स्त्री पिंड हूँ। इसमें क्या बड़ी बात है, हजारों कच्चे पिंड ही जबकि अकाल मृत्यु के शिकार होते हैं तो वे ही पिशाच बनते हैं।

प्रेत ध्वनि-1 : मैं भी जानती हूँ, वह तो मामूली है। मगर उस घड़ी पर मेरी माँ ने जो पीड़ा भुगती वह तो मामूली नहीं है ...।

प्रेत ध्वनि-2 : सो क्या। सभी स्त्रियाँ वैसी ही हैं। अस्तित्व का सवाल जब उठता है तब निर्जीव बन जाती हैं। रोना-धोना, कुपित होना आदि का रत्ती भर मूल्य नहीं होता ...।

प्रेत ध्वनि-1 : इन सबसे बढ़कर है मेरी कहानी, सुनो, वह मेरी माँ ...।

(Flash Back)

प्रेत-माता : मेरी कोख का बच्चा लड़की हो सकता है। मगर वह मेरी बच्ची है। आप अपनी कमाई से इन्हें पाल नहीं सकते हैं तो मुझे और मेरी तीन बेटियों को छोड़ दीजिए। मैं किसी न किसी प्रकार पाल लूँगी।

प्रेत-पिता : सुनो, मैं जैसा कहूँगा वैसा ही होगा। केवल लड़कियों को जन्म देकर इस समाज का सामना आखिर कैसे किया जा सकता है? मुझे और मेरे पूर्वजों को क्या मुक्ति नहीं चाहिए? तिस पर इसका शादी-ब्याह, दहेज आदि हैं। हाय रे हाय। लग रहा है मानो कोई गला घोंट रहा है।

प्रेत-माता : अपनी दाल पकाने के लिए किसी की बताई हुई बात को मेरे सामने दोहराओ मत। स्वयं सोचिए तो।

दादी : बेटा, मुझे ही सबक सिखाने आ रही है तेरी बीवी। यह इतना अकलमंद बनी है कि मेरी बात को झूठ बता रही है। हे बेटा,

क्या तुम मर्द नहीं हो, घसीट लो उसे बाहर, पाँव से लगाओ मार पेट पर। लड़की पिंड को कैसे निकाल न लेगी, हम भी देखेंगे। वह अपने आप गिर जाएगा।

माता : सासजी, आप एक पल भर के लिए यह सोचो कि आप भी एक स्त्री हो, तब जाकर स्त्री का मूल्य मालूम होगा। यदि आप न होती तो तुम्हारा बेटा इस भूमि पर आता कैसे?

पति : क्या मुझे तुमसे सबक सीखनी है? अब क्या करता हूँ देखो। तेरे बाल नोंच कर, तेरे कपोल भर दो लात लगाऊँगा देखो ... मुझसे ही वाद-विवाद करती हो, बताओ वाद-विवाद करती हो?

माता : अरे हाय! मर गई! मेरी रक्षा करो—हाय-हाय! मेरे पेट पर मार दिया ... अरे है कोई बाहर। आओ, बचाओ मुझे।

रोने की आवाज Pathetic music-slowly fade out

प्रेत ध्वनि-1 : (निरुत्साह से) अम्मा जिंदा रही। मगर इसके गर्भ में मैं जो रही, उसकी लात के आघात से मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया, साँस रुँध गयी, वहीं लाश बन गई।

प्रेत ध्वनि-2 : अच्छा हुआ। एक ही लात से निर्जीव हो गई, माँ के जैसे हर दिन न मरकर एक ही लात से मुक्ति पा गई, पुण्यशाली हो तुम।

प्रेत ध्वनि-3 : अच्छा, बताओ कि तुम्हें हुआ था यहाँ आने के लिए?

प्रेत ध्वनि-2 : मैं आराम से थी—शादी के बाद—नई दुनिया—एक साल के अंदर ही मुझे एक बच्चा पैदा हुआ। हफ्ते में एक दफा आने वाले पति का इंतजार करती थी–

पति : (Effect + flash back + door knock) पद्दी, हे पद्दी! सवेरे-सवेरे कहाँ मर गई?

पद्मा : थू तेरी—तेरा मुँह हो काला, राम-राम कहकर लोगों के उठ जागने के समय में ही गले तक पीकर आए हो, शरम नहीं आती?

पति : चुप कर, शोर मत कर, लंबी दूरी का सफर करके जो आया था, सुस्ता गया था। न-न ... करने पर क्लीनर केचा ने एक क्वार्टर पिला ही दिया, तेरे मंगलसूत्र की कसम, मैं पीने वाला नहीं था, अबकी बार के लिए छिमा कर दो री।

माता : अच्छा, खाना बनाया है, आओ खा लो (Flash back ends)।

प्रेत ध्वनि-2 : खुशी-खुशी से हम जीवन चला रहे थे- मगर ----र

प्रेत ध्वनि-1 : आगे सुनाओ, यों रागालाप क्यों करती हो ...।

प्रेत ध्वनि-2 : (लंबी सांस लेकर) आगे जो हुआ उसकी लंबी कहानी है— उस दिन (Effect-flash back)।

पद्मा : (Fade in Flute Patho) वैसा मत बताओ डाक्टर, एक ही बच्चा है ... मुझे जिंदा रहना है, उसे झूठ कहिए...।

डाक्टर : जो कुछ होना है हो चुका है माँजी। अब भगवान पर भरोसा करके जितने दिन जीओगी, आराम से जीओ। देखो, पद्मा, तुम अपने पति को बुला लाओ। उसकी जाँच करके दबा देती है ...।

पद्मा : (गला भर आता है) उसका सत्यानाश हो। उसी के कारण से मैं यह सारी पीड़ा का अनुभव कर रही हूँ। वह मर भी जाय, इसकी सूरत नहीं देखूँगी ... (Flash back)।

प्रेत ध्वनि-2 : जाने कैसे गाँव वालों को खबर मिल गई।

लोग : (Flash back) सुनो, उसे वह बीमारी है। पेट्रोल डालकर जलाओ।

पद्मा : (स्वगत) हे, आप जैसे कमीने मर्दों से ही मुझे यह बीमारी लगी है (लोगों का शोर-रौद्र संगीत ... (Flash back ends)।

प्रेत ध्वनि-2 : इस कमीने समाज ने मुझे जीने नहीं दिया। मैंने जो गलती नहीं की, इसके लिए यह शरीर मजबूरन छोड़ना पड़ा है, हाय मेरा बच्चा, तुम्हें छोड़कर मैं कैसे रहूँ। उस दिन डाक्टर से तो गिड़गिड़ाया ...।

प्रेत ध्वनि-3 : बेचारी, तुम्हारे पास दूसरा कोई चारा नहीं था। जीने देंगे तो जीएँगे न। मरना कौन पसंद करता है, बताओ तो।

प्रेत ध्वनि-1 : उसके अलावा हमारे पास और कौन सा मार्ग है, बताओ तो? तुम्हें जिंदा रहना था, मार दिया न?

प्रेत ध्वनि : मनुष्य समाज में संबंधों का कोई मूल्य नहीं है, यही संस्कृति बन गई है। विज्ञान की प्रगति जैसे-जैसे हुई, संस्कृति का नाश होता गया। गलती किसी की है, दंड दूसरे को है।

प्रेत ध्वनि-3 : मेरी कहानी दूसरी है...।

प्रेत ध्वनि-1 : वह मेरी कहानी से भिन्न न होगी।

प्रेत ध्वनि-3 : स्वयं नालायक होने पर भी लोक की दृष्टि में अपने को श्रेष्ठ साबित करने के झूठे अहं के लिए मेरी कहानी की इतिश्री ढाल चुके मेरे

पति और उसकी माँ ... आज भी जगत की दृष्टि में बेगुनाह हैं।

किंतु मैं अपने स्थान पर दूसरी जो हिंसा का अनुभव कर रही है, उसको देखकर मैं कुछ भी कर नहीं पा रही हूँ। ऐती हताशा स्थिति में हूँ।

प्रेत ध्वनि-2 : जब जिंदा थे तभी हम हार गए थे— अब क्या करना संभव है? अब मौन दर्शक हैं ...।

प्रेत ध्वनि-3 : उस दिन मैंने प्रतिवाद किया, किसी बात की चिंता किए बिना मैंने जो बाते की वे मेरे लिए फंदा बन गई, ऐसा मैंने सपने में भी सोचा तक नहीं था (Flash back)।

मरने से पहले तेरे बेटे को देखना चाहती थी—

बेटा : वह तो सही, मैं क्या करूँ माँ?

माता : शादी होकर 8-9 साल गुजर गए, बच्चे न होने वाली बाँझ को अपने पास रखकर क्या करोगे रे, छोड़ दो उसे और दूसरी शादी कर लो, बस।

बेटा : वह सब नहीं होता है माँ, कानून मानता नहीं।

माता : वह कुछ भी कहे, क्या हमारा वंश नहीं बढ़ना है? कानून क्या जाने धरम-करम?

बेटा : अंटसंट बातें करके मेरा दिमाग मत खपाओ माँ।

माता : क्या तुम अभी नन्हे बच्चे हो। तुम्हें भी सोचने की अक्ल है। यदि तुम मन से सोचोगे तो सैकड़ों रास्ते निकल आएँगे। एक बार सोचो तो। बच्चे रहित घर क्या घर है बेटा ...।

(धीमी ध्वनि में) वह आ रही है, चुप हो जा ...।

पत्नी : (गुनगुनाते हुए) क्या आपने मुझे बुलाया सासु जी?

पति : क्या है? बलखाते हुए गुनगुना रही हो?

माँ : चार आखर क्या लिखे-पढ़े, अपने को बड़ी अक्लमंद मत समझ रही। इतने दिन हुए, तुम एक बच्चे को जन्म न दे पाई, तुम्हें यह घर-गृहस्थी क्यों चाहिए?

पत्नी : इसके बारे में मुझ से क्या पूछती हैं— अपने बेटे से पूछिए ... उनसे यह काम संभव होता नहीं, मैं क्या करूँ?

बेटा : अपनी जीभ पर काबू रखो। मेरी मर्दानी पर चोट करोगी तो तुम्हें छोड़ना नहीं।

पत्नी : क्या कर लेते हैं? परसो डॉक्टर साहब ने ही बताया न कि आप में ही कुछ दोष है।

बेटा : चुप, बंद करो अपना मुँह।

माता : मेरा बेटा क्या नालायक है? नामर्द है? यह कितने पानी में है, देख लिया न बेटा। मैंने बताया न, यह मुँहजोर औरत है। तुम मेरी बात कहाँ सुनते हो। यह एक बार मुँह खोलती है तो बस, चुप होने का नाम नहीं लेती है। तुम इसकी बात सुनते रहोगे तो कल तुम्हें कोई लड़की नहीं देगा।

बेटा : अब मैं क्या करूँ, बताओ, रस्सी लेकर फंदा लगाऊँ?

माता : तुम क्यों लगाते हो फंदा बेटा? उसे इसे लगाओ। बता देंगे कि बच्चे न होने के कारण इसने फंदा लगाया। सारा गाँव विश्वास करेगा।

पत्नी : आप लोगों की संगत ही नहीं चाहिए, मैं कहीं दूर जाकर जी लूँगी।

बेटा : जाती कहाँ हो, हरामी की बच्ची। मेरी मर्दानी को चुनौती लगा रही हो। तुम्हें इतने दिन छोड़ा, यही गनीमत है।

माता : मुँह क्या देख रहे हो रे, ला मिट्टी का तेल और दियासलाई, बहुत हुआ इसका।

पत्नी : (पत्नी का रोना चिलाना चरम-अवस्था पर सुनाई पड़ता है— Flash back ends)

प्रेत ध्वनि-1 : बिलकुल कसाई है, उसे कुछ नहीं लगा?

प्रेत ध्वनि-2 : भूमि पर ऐसी कितनी ही घटनाएँ घटती हैं, उनके लिए कारण दिए जाते हैं दूसरे।

प्रेत ध्वनि-3 : औरत से ही है सृष्टि और अंत ... वैसे ही यह भी दस में एक और ग्यारहवाँ।

प्रेत ध्वनि-4 : मैं तब से आपको सुन रहा हूँ कि आप कहती जा रही हैं कि मात्र पुरुष ही गलत काम कर रहे हैं ... मगर ...।

प्रेत ध्वनि-1 : लगता है कि कोई पुरुष प्रेत है— चुप हो जा ...।

प्रेत ध्वनि-1 : यों डरकर ही हम इस हालत पर पहुँच चुकी हैं ... अब भी डरेंगी तो।

प्रेत ध्वनि–4 : शायद तुम्हें पता नहीं कि रूखे–सूखे वाद में हमेशा स्त्रियाँ ही आगे रहती हैं। आप पुरुषों को उकसाकर उन्हें गलत काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। गलती आपकी है। सारे कानून स्त्रियों के पक्ष में हैं।

प्रेत ध्वनि–1 : देखा न? है एक ही पुरुष प्रेत, मगर यह कैसा वाद कर रहा है कि वह श्रेष्ठ है?! थू ... छिः – निकल जा ...।

प्रेत ध्वनि–4 : पत्नी की बात मैंने मानी नहीं, अतः उसने कानून की कैंची में फँसाकर मुझे बड़ी तकलीफ दी। जानते हैं क्यों? शादी करके जैसे ही वह मेरे घर आई, कहने लगी कि अलग घर बसाओ, ढ़लती उम्र के माँ–बाप को दूर करने को कहा। यह कहीं संभव होगा? ऐसा करना क्या मनुष्यता है? न कहा, तब उसने दहेज–केस में मुझे फँसा दिया जो सही है? तड़प–तड़पकर अपमान सहन पाकर जान से हाथ धोना पड़ा। मैं एक शरीफ आदमी था। आप औरतें अपने पर हुए शोषण की राम कहानी सुनाकर हल्की होती हैं। मगर हम मर्द न रो सकते हैं न हँस सकते हैं। यही मेरे अंत का कारण बता। प्रेत जो भी बने हैं वे किसी न किसी प्रकार के शोषण का शिकार होकर जान दे चुके लोग ही हैं। इसमें पुरुष–स्त्री का भेद–भाव ही नहीं है। प्रेतवन में सब एक समान हैं। श्मशान में स्थित बरगद के पेड़ की टहनियों पर उल्टे पाँव होकर और उम्र पर असहायक होकर झूल रही प्रेतात्माएँ हैं ये।

तिम्मजी की मुर्गी

(दुःख भरा संगीत)

तिम्मजी : मुद्रा, अरे मुद्रा। ...मेरे दिल के अंदर ही जलन को तू क्या समझ पाएगा?...मुर्गी मेरी ज़िंदगी थी बिटुआ!

(मुर्गे, मुर्गियों की और चूजों की आवाज़ ... को...कोक्कोक्को... कोक्कोक्को...)

तिम्मजी : को...कोक्को... रे मुद्रा, देख रे वह बड़ा मुर्गा क्यों चिल्ला रहा है?

धत् साले की, ... उस बेचारे सांबशिव की छोटी मुर्गी के पीछे पड़ना शुरू किया है। ...थोड़ा देख रे...थोड़ा नज़र रक्खो तो...

मुद्रा : अरे भाई, चुप क्यों न रहती। तेरे मुर्गी पालना बंद होकर दो बरस हो चुके हैं! ... अब भी वही सोच-सोचकर क्यों हल्ला मचा रही हैं?

तिम्मजी : हाङ्ग, तू भी ठीक कहता है रे। अब मैं मुर्गी नहीं पाल रही हूँ न! (अपने आप में) (अपने मन की वेदना को बाहर डालते हुए धीमी आवाज़ में)

उन दिनों घर, भर, आंगन भर, लाल, सफ़ेद, काला जाने कितने रंग के मुर्गे-मुर्गियाँ आंगन भर चहचहा रहे थे। ... कोक्कोक्को...कोकोक्को... कैसी मीठी आवाज़ ... सोचती थी कि दो दर्जन मुगियाँ तो हैं। बिल्ली ले चलते हैं, गिद्ध उठा लेता है, फिर कम से कम बीस तो ज़रूर

बचेंगे ही। ...अगर ये मुर्गे-मुर्गियाँ बड़े साइज़ की हो जाएँगी तो कुप्पलापुर के छोटे बाज़ार में हफ्ते में पाँच मुर्गियाँ बेचूँगी तो कम से कम दो सौ-ढ़ाई सौ रुपए हाथ आ जाते हैं। हाट से एक बैग रागी, मिर्ची, नमक कुछ तो ला सकते हैं। ...अरे, हाय, क्या करना? ...पापी पेट भरना आसान नहीं है। ...आजकल गुज़ारा चलाना ही मुश्किल सा हो गया है।

(पाज़)

: अरे भाई, क्यों चुप बैठ गयी? ...ज़माना बदल गया है। ...मैंने भी गाँव-शहर सब कुछ देख लिया है। ... पहले तो तुम दिल खोलकर मुर्गी पालती थी। ... मुर्गी का झुंड लेकर हाट में जाती थी, अपने मनपसंद दाम पर बेच आती थी। कोई कम दाम पर माँगे तो भी एक या दो रुपए कम देकर खुशी से ले चलता था। ... तुम भी खिले मुँह पर वापस आती थी। लेकिन आज न जाने इन लोगों को क्या हो गया है। घटे दाम पर देने को मज़बूर करते हैं, जबर्दस्ती करते हैं। ...

रंगम्मा : तिम्मक्का, तिम्मक्का... अरे मुद्रा, ...हाय रे, क्या यही है तेरी माई, ...पहचानना ही मुश्किल है। ...ज़बर्दस्त औरत थी...क्या हो गया है बुढ़िया को ...क्या सोचती बैठी रहती हैं? ...माथे पर इतनी झुर्रियाँ पड़ गयी हैं।

तिम्मजी : कौन ...कौन रे ...रंगम्मा, अरे आओ, आओ। बहुत दिन हो गये तेरे यहाँ आकर। ...मैं कहाँ जाती हूँ? ...मज़दूरी करने के लिए बाहर चलने को सोचती हूँ तो बाहें दुबली पड़ गयी हैं। मुर्गी पालना चाहूँगी तो वह भी नहीं बनता, बाज़ार में लोग मनमानी दाम पर लेने पर तुले रहते हैं। अंडे से लेकर अंडे सेतने तक इक्कीस दिनों तक देखरेख करते रहना चाहिए, मुर्गी बनने तक जतन से देखते रहना चाहिए। बड़ी मुर्गियाँ छोटी मुर्गियों को कुचल डालती हैं, इसकी ओर भी होशियारी बरतनी चाहिए। बाहरवाले बिल्लियों से, गिद्दों से, कौओं से मुर्गियों को बचाकर रखना चाहिए। चोरों से मुर्गियों को बचाने में कितनी भी होशियारी बरतें तो भी कम होगा। इतनी सारी मेहनत करने पर भी फ़ायदा तो बिलकुल नहीं।

रंगम्मा : हाँ बहिना, सब कुछ जानती हूँ। कौन चाहता है ऐसी खुशी?
... शहर भर लोग मनमानी बातें करते चलते हैं। ये सारे झंझट कौन जानता है?

तिम्मजी : हाँ बहिन,

(अपने आप...) (पुरानी बातों को याद करते हुए) ...कितना अच्छा था वह ज़माना!

(फ्लैश बैक)

ग्राहक : मुर्गा कितने में मिलेगा?

तिम्मजी : लीजिए भाई साहब। ...आपको ज्याृदा कौन बताएगा?

ग्राहक : वह तो ठीक है। ...पर बताओ कितने पैसे देने हैं?

तिम्मजी : इसमें छुपाकर कहने की क्या बात है भैया,

एक-एक के लिए पचास रुपए। सस्ते में ले चलिए।

इसका गोश्त क्या है, मीठा मिठास है बाबूजी।

ग्राहक : पचास रुपए! बहुत महँगा हुआ। इसके पर और चमड़ा निकाल दें तो एक किलो मांस भी नहीं मिलेगा। इसके लिए पचास रुपए क्यों दें?

तिम्मजी : इसके आगे आपकी मर्ज़ी। आप जितना देंगे उतना ही लूँगी। मैं मना नहीं करती।

ग्राहक : तुमने तो पूरी मेहनत की है। तुम्हें नुक़सान नहीं होना है। इसीलिए रखो इसे।

तिम्मजी : एक ही बस है बाबूजी, और एक लीजिए।

तिम्मजी : अब के लिए बस बहिना। ज़रूरत पड़े तो फिर लूंगा। ...

रंगम्मा : तिम्मक्का, तू अपनी पुरानी यादों में खोयी जा रही है।

आजकल ज़माना बहुत बदल गया है।

सारी मेहनत उठाकर इस मुर्गे-मुर्गियों का मलमूत्र साफ़ कर, दिन-रात एक करके मुसीबत उठाने पर भी मनमाने भाव पर बेचने को माँगते हैं। परसों क्या हुआ कुछ मालूम है तुम्हें...?

तिम्मजी : रंगव्वा, वह क्या सुना है तूने। आजकल नये ज़माने में दुनिया भर के मुर्गे-मुर्गियाँ हमारे यहाँ आ पहुँचे हैं।

रंगम्मा : (आश्चर्य और आशंका से) वही एक मुसीबत बन गयी है

तिम्मक्का! पिछले हफ्ते भरे बाज़ार में किसी आदमी ने मुझसे झगड़ा करना शुरू कर दिया।

(पिछली याद। फ्लैश बैक ...बाज़ार का शोरगुल)

एक आदमी : क्या दाम है? कितने में बेच रही हो इन देसी मुर्गियों को?

रंगम्मा : आओ भाई। तुम्हें क्या ज़्यादा बताऊँ? सस्ता है, बस एक सौ रुपए दीजिए।

एक आदमी : अरे भाई, किस ज़माने में हो तुम?...पता है तुम्हें, आज जापान, जर्मनी, अमरीका - दुनिया भर के मुर्गे-मुर्गियाँ एक पल में जहाँ कहीं भी मिल रहे हैं। ...जानती नहीं?

रंगम्मा : (बिना कुछ समझे) पता नहीं बाबूजी। हमने बहुत कुछ मेहनत उठायी है। सो रुपए मिलेंगे तो दे दूंगी।...

एक आदमी : इन लोगों को चलती दुनिया की सच्चाई का पता ही नहीं है।

पागल जैसे बोलते हैं। देखो भाई, मेरे इस बैग में डिब्बा है, इसे देखो। इसमें मुर्गी का मांस है। बहुत दूर से पैक होकर यहाँ तक आया है।

रंगम्मा : वह कितने दूर से आया है बाबूजी!

एक आदमी : उसका तुम सपने में भी अंदाज़ा नहीं लगा सकती। पाँच हज़ार मील से भी ज्यादा दूर! वहाँ के लोग हमारे गाँव के बराबर वाले बड़े फ़ार्मों के मुर्गी पालते हैं। ...ब्रॉयलर, अंडा मुर्गी...न जाने और कितने तरीकों की मुर्गियाँ पालते हैं। उनके बड़े होने पर सीधा काटते हैं, डिब्बों में भरकर दुनिया भर रवाना कर देते हैं। मांस को सड़ने से रोकने के लिए केमिकल्स मिला देते हैं। ...

(दृश्य परिवर्तन - गाँव का शोरगुल)

ध्वनि 1 : मरितिब्बेगौडा के आंगन का मुर्गा घुस आया है। ... मारकर भगाओ उसे।

ध्वनि 2 : अरे भाई देखो, हमारा मुर्गा तो इतना दुबला-पतला है। न जाने क्या कर पाता है! उसका मुर्गा तो पहलवान जैसा मोटा-चौड़ा है, खूब मस्त दिखाई दे रहा है। फिर भी इस तरह पीछे-पीछे क्यों हट रहा है?

ध्वनि 1 : वही है इसका राज़ यार!

ध्वनि 2 : ऐसा कौन सा राज़ है वह?

ध्वनि 1 : इधर सुनो। किसी को नहीं बताना, समझे! ज़रा कान इधर लगाओ तो।...हमारे रामेशी, शिवण्ण ये दोनों हैं न, ये दोनों सुबह-सुबह उठकर

दावणगेरी, हुलिगम्मा बळ्ळारी दुर्गम्मा, बिसिल मारम्मा—इन देवियों के पाँव पकड़कर, मन्नत मानकर, काट्रळ्ळी पुजारी के पास जाकर टीन का ताबीज़ बनाकर ले आये हैं। ... समझ गये न? !!

ध्वनि 2 : ऐसी बात है क्या? तो ठीक है। ...तो पुजारी ने बहुत सारा पैसा जुटाया होगा न!

ध्वनि 1 : और क्या? इतना बड़ा तगड़ा मुर्गा, पर छुपाकर, गरदन नीचे करते हुए पीछे दौड़ता है, इसका क्या मतलब होता है, तुम्हीं हिसाब लगाओ। बदले में उल्टा मारे तो क्या होगा, एक मिनट अंदाज़ लगाओ।

ध्वनि 2 : देवी की महिमा इतनी बड़ी है, मुझे पता नहीं था। आदमी लोगों पर मंतर-तंतर का प्रयोग होता है, यह सुना था, लेकिन जानवर पर भी ऐसा प्रयोग करके चुप कराते हैं, यह बात मेरी समझ के बाहर थी।

ध्वनि 1 : तुम हो किस ज़माने में? अब सब कुछ बदल गया है। ...पिछले कटाई के दिन में तुमने देखा नहीं क्या?...गाँव की साबोजी की गायों को न जाने क्या हुआ, एकदम नीचे गिरकर मर गये।

ध्वनि 2 : होंगे कोई दुश्मन लोग। न जाने क्या क्या जंतर-मंतर किये होंगे, बेचारी गायों की बलि चढ़ गयी। क्या यह सच हो सकता है?

ध्वनि 1 : और क्या...गायें यों ही मर जाती हैं?...

(चिल्लाहट...बड़ी चढ़ी आवाज़ में हँसी)

मरितिब्बेगौडा : यह क्या तिम्मजी, तेरी मुर्गी इस तरह तरतर्रा रही है?...मेरे खरीदने से पहले तुम तो उसकी बड़ी शाहबासगिरी कर रही थी कि तेरी मुर्गी ऐसी है, मेरी मुर्गी वैसी है, सारी बातें कर रही थी। लेकिन वही मुर्गी आज नालायक हिजड़े जैसे इधर-उधर दौड़कर छुपने के लिए तड़प रही है।

तिम्मजी : थोड़ा सब्र कीजिए बाबूजी! सारे लोग इकट्ठे हुए हैं। लोगों को देखकर मुर्गी डर गयी है। ...अरे, आ रे इधर ...मेरे रुस्तुम!...दिखा तेरी हिम्मत!...

चन्या : तू क्या हल्ला मचा रही है बड़ी दीदी, तेरी मुर्गी कुछ नहीं कर सकती। यूँ ही घबराकर घूम रही है। मरितिब्बेगौड ज़रूर पैसे खो बैठेगा। ...

तिम्मजी : चुप रह बे चन्या!...वह मेरी मुर्गी है। मुझे पता है कि उसकी ताक़त क्या है।....

चन्या : बहुत देखी है तेरी मुर्गी की हिम्मत। ताक़त हो तो लड़ाओ फिर से। कम से कम मरितिब्बेगौड के पैसे वापस मिल जाएँ तो अच्छा होगा। ...तुम्हें और दो सौ रुपए बख्शीश दे देता हूँ।...

तिम्मजी : चल बे, किसको चाहिए तेरे पैसे? देख इसकी ताक़त क्या है?...चल रे!...आगे बढ़ो, उसकी गरदन पकड़कर चूर-चूर करके रक्खो। ...पी जाओ उस साले का खून!...

(अपने आप)...यह क्यों ऐसा चुप बैठ गया?...नामर्द कहीं का...नालायक...घर पर हमेशा दूसरी मुर्गियों से झगड़ने के लिए तुला बैठा रहता है, इधर क्या हो गया है इसे। उत्तर कुमार की मर्दानगी चूल्हे के सामने...अरे, केंप्या...बढ़ो आगे साले...बढ़ो।...

चन्या : चीख-चीखकर गला क्यों सुखाती हो तिम्मक्का? तुम्हारे चिल्लाने से क्या तेरी मुर्गी रुस्तम बनकर बढ़ जाएगी आगे?...

तिम्मजी : नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। कुछ गड़बड़ हुआ है। ज़रूर किसी ने कुछ कर दिया है। मेरी मुर्गी को हराने के लिए दो चवन्नी, एक नींबू आदि लेकर पुजारी के पास होकर आया है साला। ... उसके कमर में जो नींबू है, पहले उसे बाहर निकाल...चल...। निकाल।

तिब्बेगौडा : तिम्मक्का, क्या हो गया तुझे?...लोग देख रहे हैं। ...चुप रहा।...

तिम्मजी : क्यों चुप रहूँ साले मरितिब्बा? ...क्या समझ बैठे हो मुझे? ...देवी हूँ मैं देवी! ...उसके हाथ में जो नींबू है, उसे ज़मीन पर फेंको, तेरी मुर्गी की जीत हो जाएगी। ...

चन्या : झूठा बर्ताव कर रही है बुढ़िया अपनी हार छुपाने के लिए। कोई प्लान बना रही है।

तिम्मजी : सुन बे, ...क्या तुम लोग देवी माँ की इज्जत नहीं करते। ...मैं बिल्कुल देवी माँ हूँ। ...यह सच है।

तिब्बेगौडा : धत्, इस बुढ़िया को यहां बुलाकर हम लोग अपनी इज्जत गंवा रहे हैं।

तिम्मजी : (आँखें मूंदकर विदग्ध मन से)...हाँ...हाँ...तुम लोग कभी आगे नहीं बढ़ सकते। बरबाद हो जाओगे। ...मेरी बेइज्जती करते हो...देवी माँ की फिक्र नहीं है?...

(दृश्य परिवर्तन)

मुद्रा : न जाने इस बुढ़िया के सिर कैसी मुर्गी का भूत चढ़ा है? ...कुछ भी बोलें तो पुरानी बातों की याद करते-करते बेहाल हो उठती है। परेशान कर देती है।

तिम्मजी : अरे बेटे मुद्रा, मेरे दिल के अंदर की जलन तुम क्या जानो। मुर्गी मेरी ज़िंदगी थी। मेरी सांस थी। ...अंडे की हालत से लेकर चूजे बनने तक क्या कुछ सह पाती थी मैं! ... बच्चे को जन्म देने के दर्द का सा अनुभव करती थी। न जाने वे मनहूस मुर्गियाँ कहाँ से आ टपकीं, मेरा सब कुछ बरबाद हो गया...बिल्कुल लुट गयी मैं। ...अब एक ही चीज़ बची है। ...यादें...पुरानी यादें। उन्हीं यादों के सहारे जीते हुए अपने दिल की जलन भूलने की कोशिश कर रही हूँ।...

मैं कब की बिक चुकी हूँ ...

(संगीत)

(फ़ेड इन)

ध्वनि एक : इस गुलाम का दाम एक सौ अशर्फ़ियाँ है...

ध्वनि दो : इस गुलाम का दाम तीन सौ अशर्फ़ियाँ है...

ध्वनि एक : इस कमीज़ का दाम सिर्फ़ दस अशर्फ़ियाँ है...
...एक बार...दो बार...दो बार...दो बार...आखिरी बार...

(फ़ेड आउट)

मैं कब की बिक चुकी हूँ ...

* * * * *

पीकी : (अपने आप-विषादभरी ध्वनि में) हाँ, यह दृश्य कितना दर्दनाक है, फिर भी सच है। कितनी बड़ी सच्चाई, वास्तविकता इसमें छुपी हुई है।...इस धरती पर जीने वाले अनगिनत प्राणियों में मैं कौन हूँ, क्या हैसियत है मेरी...? चार दीवारों के बीच बंधी हुई मुझ जैसी लड़की के लिए बाहर की दुनिया बिल्कुल अनजान है। ... सेवाभाऊ के मंदिर के सामने दीवाली के दिन नाचते हुए लड़कियों को आस भरी आँखों से देख रही थी। ... लेकिन आज सबकुछ सपना है, धुंधली यादें, बस...यह सब देखते देखते शंका होने लगती है कि मैं भी इन्सान हूँ कि नहीं।...

(पाज़)

* * * * *

(इफेक्ट; बाज़ार का शोरगुल)

ध्वनि 1 : दस रुपए में ढेर सारा अमरूद..आओ माई, ...ले लो मीठा है...जामुन है ले लो भाई...

ध्वनि 2 : बीस रुपए में एक किलो बैंगन ...ले लो, कहीं नहीं मिलेगा...आठ रुपए में एक किलो मूली, ले लो भैया, ले लो माई...बीन्स चालीस रुपए में...ले लो ...खरीद लो...

ध्वनि 3 : कुछ कम पैसे में दे दो ना...महँगा है...इतना बोलोगे तो खरीदेगा कौन?

ध्वनि 2 : नहीं मांजी, हमारे यहाँ सिर्फ़ एक ही दाम है बस।

(फेड आउट)

* * * * *

पीकी : (विषाद भरी आवाज़ में) मेरी जिंदगी...हम भी इन साग-सब्जियों के जैसे कहीं हैं...इन्हें टोकरियों में भरकर बेचते हैं और हमको...मुझ जैसे अभागिनों का तो बिना अस्तित्व का जीवन...औरतों की यह मजबूरी, यह दुख-दर्द इस भरी दुनिया में दुश्मनों के लिए भी भगवान करें, न आये...हम जैसे बदकिस्मत लोगों की इस हालत के लिए एक नहीं, कई कारण होते हैं। ...

वह काला दिन मुझे अब भी बिलकुल याद है जब मेरे सारे सपने चूर-चूर होकर मिट्टी में मिल गये।

* * * * *

(चेंज ओवर)

(पीकी बच्चे को संभाल रही है...दुलारने की मीठी आवाज़)

चोकला : बंगारी...अरे बंगारी...न जाने कहाँ मर गयी...पीकी, अरे ओ पीकी, कहाङ्ग जाकर मर गयी तेरी अम्मी...?

पीकी : अरे, ...कैसी है मुन्नी रानी...मेरी छोटी बहना...(बाप की तरफ़ मुड़कर) पता नहीं अब्बा, ... वह अभी तक आयी नहीं...मैं बच्चे को संभाल रही हूँ।

चोकला : अभी-अभी लकड़ी बेचकर आयी है। ...कुछ पैसे मिल जाते तो उस द्यामा की दुकान जाकर...मटका भर शराब पीकर आ जाता...शाम होते-होते सर भर कीड़े मरोड़ने लगते हैं...दिल कांपने लगता है... न जाने दिल कहाँ-कहाँ तक ढूँढ़ने-फिरने लग जाता है, दिमाग पूरा आफ़ हो जाता है।

...अरी, कहाँ मर गयी है?...

(झोंपड़े का दरवाज़ा खुलने की आवाज़)

क्यों री, पता नहीं कि इधर मैं तेरी राह देखते बैठा हूँ...परवाह ही नहीं है...दे दे...देर लग रही है मुझे...

बंगारी : इस वक्त यहाँ मेरी राह देखते बैठे हो, इसका मतलब क्या मैं नहीं जानती।...निकम्मा कहीं का, एक पैसा कमाता नहीं,...लेकिन लत पूरा करने के लिए पैसे माँगता है। ...पिछले हफ्ते चामव्वा की दुकान पर जो उधार लाया था, उसे चुकाकर अभी घर पर पाँव रख रही हूँ, मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। ...

चोकला : (खुशामदी करते हुए) ऐसे कैसे कर सकती हो?...दे दो ना पैसे...

बंगारी : मेरे पास पैसे कहाँ से आ टपकते हैं।...अभी बताया न, दुकान पर उधार चुकाकर आ रही हूँ। ...लकड़ी का इतना बड़ा बोझ सिर उठाकर चली थी कि सिर चूर-चूर हो गया है। दर्द हो रहा है बड़ा। ...गाँव के मंदिर के सामने घंटों भर खरीददारों की राह देखते-देखते थककर बेच आयी...। दो टुकड़े बना लिये थे लकड़ी का, फिर भी बारह रुपल्ली भी नहीं मिली। ...

चोकला : ठीक है,...बारह रुपए तो लायी।...उसका तो हिसाब दो। कर्ज़ा चुकाने के बाद बचे कितना, ...कम से कम उसे इस ओर सरका दो न।...

बंगारी : (व्यंग्य ध्वनि में) क्या बोल दिया रे,...पसीना-पसीना बहाकर कमानेवाली मैं इधर ठहरी...तुम हर हमेशा औरों का पीछा करते हुए जगह-जगह आवारा सांड के जैसे घूरते रहते हो। ...गुम्मा का मंदिर, सेवाभाऊ के यहाँ, स्कूल के दरवाज़े पर हर कहीं निकम्मा घूमते नज़र आते हो, ...तुम्हारे इस तोंद पालने के लिए, बीड़ी पीने के लिए, शराबख़ाना जाने के लिए मुझसे पैसे माँगोगे तो कहाँ से लाऊँ?...दीवाली आ रही है, ...पीकी दीया पकड़ती है, बच्चे नाचते हैं, दीये पर चढ़ाने के लिए चार पैसे की जरूरत तो होती है न?...

चोकला : क्यों री,...मुझे ही सारा सबक पढ़ा रही हो...जल्दी निकाल पैसे... नहीं तो...

बंगारी : नहीं तो, ... क्या कर दोगे...? (रेसपोन्स)

चोकला : नहीं तो, नहीं तो खूब मार खाना पड़ेगा...पता तो होगा न...?

बंगारी : अरे, चल...आ गया बड़ा मारने वाला...पैसे-पैसे कमाकर घरवालों का पेट भरनेवाला...बड़ा आ गया मर्दानगी के साथ...मारोगे कैसे, ... मारो, मैं भी देख लेती हूँ...

चोकला : क्या बक रही है...? घर के मरद की इज्ज़त भी करना नहीं जानती। मेरी मर्दानगी को लेकर सवाल करती है। ...कुतिया कहीं की... (मारता है) निकाल पैसे...पैसे निकाल बाहर, नहीं तो जान ले लेता हूँ। ...खून पी जाता हूँ। ...

बंगारी : (चिल्लाते) हाय दैया, ...मर गयी मैं...शैतान कहीं का...तबाह हो जा...कहीं डूब मर जा...डाकिन पिसाच तुम्हें खा जाये...यह भी भूल गया पापी कि मेरे पेट में बच्चा पल रहा है। ...मर गयी हाय रे...कोई आकर मुझे बचा ले...नहीं तो यह शैतान आज मेरा खून पीकर ही रहेगा। ...हाय दैया...हाय दैया...(रोती है)

* * * * *

चोकला : जल्दी ख़त्म करने के लिए यह तो भैंस-बकरों का या मुर्गियों का सौदा थोड़ा ही है। ...थोड़ा ठहरो...यह तो दिल से रिश्ता रखने वाली बात है। ...रिश्ते का मामला है।...

जोगीरा : चोकला, अब बीच ये सारी बात मत ला...सौदे की बात कर...लछमी दरवाज़े पर तेरी राह देखते थक रही है।...

चोकला : रे, ...यह बात मत करो जोगीरा भैया, अब एक के साथ रिश्ता निभाते निभाते थक गया हूँ,...तुम तो दूसरे वाली की बात कर रहे हो...क्या करूँ उसे लेकर...

जोगीरा : बेशरम कहीं का...तेरे लिए दूसरी औरत की भी ज़रूरत है क्या?... लछमी का मतलब औरत नहीं, पैसा है पैसा...जल्दी सौदा पूरा करो...इधर से पैसे ले लो और उधर दामगे की दुकान की ओर दौड़ने की तैयारी करो। ...चलो, शराबख़ाने में मैं भी तेरे साथ हो जाता हूं। ...

चोकला : (शंकाभरी आवाज़ में) ...जो होना है, सो होकर ही रहेगा। हम सब के रखवाला सेवाभाऊ तो है ही,...लो, खत्म कर लो सौदा और ले चल लकड़ी को...फिर भी जोगीरा भैया, मेरी औरत भी है,...उससे भी एक बात पूछ लें...

मेरीयम्मा : मर्दों की बातचीत में औरत का क्या लेना-देना, उससे क्या पूछोगे बे, ...कहीं ना कर दोगी तो करोगे क्या?...

चोकला : कैसी बात कह रही हो मेरीयम्मा, ...आखिर इन पिल्लों को यहाँ रखकर करेंगे भी क्या?...जीकर भी रुलाते हैं,...मरकर भी रुलाते हैं, दुश्मन कहीं के...

जोगीरा : क्या मतलब है तेरी इन बातों का, क्या बकबक कर रहे हो?...बातें बनाना बंद करो।

चोकला : उसमें कौन सी बड़ी राज़ की बात है,...चोकरियाँ हैं, बड़ी होने पर शादी रचते हैं, ससुराल जाते रोती ही हैं न?...ये हमारे साथ ही रहनेवाली हैं? ...अब भी बाहर दी जा सकती हैं, शादी के बाद घर से निकलती तो हैं ही।...लेकिन ...(तसल्ली का सांस लेते हुए) अगर अब दे देंगे तो चार पैसे हाथ आते हैं। ...इन्हें पाल पोसकर, बड़ी होने के बाद इनकी शादी करना यह सब हम जैसों के बस की बात थोड़ी ही है।...

* * * * *

पीकी : कड़ी धूप में लकड़ी की गठरी-बाँधकर सिर पर रखकर बेचकर आयी थी अम्मी...अब्बा के हाथ मार खाकर चूर-चूर हो गयी थी।...औरत जात पर, औरत जन्म पर ही उसके मन में घृणा पैदा हो गयी थी। ...उसी समय यह आदमखोर मेरीयम्मा और घर उजाड़ने वाला जोगीरा दरवाज़े पर राहु-केतु जैसे आ खड़े हुए थे।...

* * * * *

चोकला : बिलकुल नहीं, इतने कम दाम में ... कभी नहीं होगा...साग-सब्जियों को खरीदने की तरह बातें कर रहे हो तुम लोग। ...क्या सोच रही हो मेरीयम्मा, आजकल साग-सब्जियों का दाम भी आसमान पर है।... ऐसी हालत में ...।

मेरीयम्मा : ठीक है, यह साग-सब्जियों की सी बात नहीं है। ...साग-सब्जी घर ले जाते हैं तो पकाकर खाने तक उनका वास्ता रहता है।...लेकिन यह तो लड़कियों का सवाल है, खाना-पीना-कपड़ा सबका इंतज़ाम करना पड़ता है।...है न, तुम्हीं बताओ।...

चोकला : क्यों नहीं, क्यों नहीं,... लेकिन आगे चलकर एक दिन पूरे का पूरा माल लूट लेती हो न...

जोगीरा : बस, बस, बेपार के बीच टकराने की ज़रूरत नहीं है।...देखो मेरीयम्मा, उसने भी मेहनत उठाकर पाला पोसा है, ...सौ पाँच सौ इधर का उधर करके सौदा कर लो।... ग़रीब आदमी है, उसका भी नुकसान नहीं होना चाहिए न।...

चोकला : हाँ, इतने छोटे-छोटे बच्चे थे, तबसे इनका पालना-पोसना सब कुछ किया मैंने। ...क्या करूँ, ग़रीबी है, लाचारी है,...दिल को पत्थर बनाकर रहना पड़ता है।...(दुःख से रोता है)

* * * * *

पीकी : उसके रोने में ईमानदारी नहीं थी। जब तक माँ को सच्चाई का पता चल सका, सब ख़तम हो चुका था। इस डर से कि फिर सख़्त मार खाना पड़ेगा या इस ख्याल से कि बच्ची कम से कम वहां चैन के दिन बिताएगी, उसके सिर्फ़ रो-रो कर आंसू बहाये...दुःख-दर्द का दरिया ही बह चुका...और आख़िर लाचार होकर सो गयी।

* * * * *

दृश्य-2

(दरवाजा खटखटाने की आवाज)

जोगीरा : कौन है घर में? चोकला...अरे भाई चोकला! कहाँ मर गया? कहाँ गया ये? थोड़े पैसे क्या मिले, काम-धंधा छोड़ के, पी के कहीं पड़ा होगा... बगारवा (बंगारी) बेटी बंगारी।

बंगारी : कौन है वो? अरे मेरे सपने पूरा खराब कर दिया, दिपावली के दिन पीकी हाथ में दिया पकड़े खड़ी थी उसके बगल में लोकी तेल का

गिलास ले के खड़ी थी। नये कपड़े पहन के मेरी बेटी राजकुमारी लग रही थी।

जोगीरा : बेटी बंगारी ...

बंगारी : आयी...अरे जोगीरा भईया आप कब आये? मैंने सुना आप शहर गये थे, कब आये शहर से? मेरा मरद ये बोल रहा था, क्या वो ठीक है?

(रोने लगती है) (रो पड़ी)

बेकार की ज़िन्दगी। न पेट पूरा भरता है, न कपड़े। बच्चा होता तो अच्छा था। ... हमें याद किया...छोटी बच्ची कितनी बार याद किया होगा, मेरी आँखों के सामने होती तो...

जोगीरी : बंगारी...बेकार की लोकी की ये यादें छोड़ो।

महारानी जैसी है वो वहाँ।

तुम्हारे पास क्या है? वहाँ...पेट भर के खाना मिल रहा है। तन ढ़कने के लिए कपड़े मिल रहे हैं, आराम की जिन्दगी कट रही है उनकी वहाँ। सच बोल रहा हूँ...

अरे भाई, मैं भूल गया था। ये लो आपकी बेटी खाने के लिए तुम्हारे लिए कुछ भेजी है। ''जोगीराया इसको ले जा के माँ को देना'', ये कह के दिया है।

बंगारी : मेरी बच्ची...इतनी छोटी उमर में इतना बड़ी सोच कैसी आयी। हे ईश्वर! मेरी बच्ची को सदा सुख दे।

पीकी, भीमी, भाड आओ बच्चों, ये देखो, लोकी मिठाई भेजी है। ये लो बाँट के खाना। उस नरक में मेरी बेटी कैसी होगी? बेटी, तुझे भूल के यहाँ मैं कैसे दिन गुजारूँ।

जोगीरा : बेटी बंगारी...ऐसे मन में अशांति पैदा नहीं कर लेना। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। चाहे तो कल सुबह मेरी अम्मा आपके घर आ रही है पूछो उससे।

बंगारी : और किस लिए आ रही है चुड़ैल मेरे घर की तरफ?

जोगीरा : क्या तुम्हें पता नहीं है? ...तुम्हारे मरद ने कब के मेरीयम्मा से एडवान्स ले चुका है।...

बंगारी : कर्ज़ा क्यों लिया?...वह कमा-कमाकर चुकानेवाला है क्या?...

जोगीरा : कर्ज़ा तो थोड़े ही लिया है।...

बंगारी : ...तो क्या मुफ़्त में पैसे दे दिये मेरीयम्मा ने?...वह तो डाइन है डाइन... हम जैसे झोंपड़ीवालों की बच्चियों को देखते ही त्यौहार मनाने लगती है बदमाश औरत...।

जोगीरा : उसने मुफ़्त में तो पैसे नहीं दिये हैं। ...देखो माई, यहाँ कमाने वाली तुम अकेली हो, खाने के लिए मुँह चार-पाँच।...वह निकम्मा हमेशा पीकर गली-गली घूमता रहता है।...इसीलिए सोच लो, घरबार की जिम्मेदारी को थोड़ा कम करने में ही अक्लमंदी है।...

बंगारी : तो क्या कर लें...।

जोगीरा : हल यह है कि तेरी बेटी भीमी को मेरीयम्मा के साथ भेज दें, इस बार...उसे लेकर चलने के लिए तेरे मरद ने ही बताया है...तांडे का रखवाला सेवाभाऊ की क़सम...मेरीयम्मा की क़सम, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। ...

बंगारी : भीमी को भी बेच डाला शैतान ने...हाय... कहीं चुल्लूभर पानी में डूबकर मर जाना बेहतर उसे...उसकी छाती फट जाए...(बद्दुआ देते हुए) आज घर आने दो...आड़े हाथ ले लेती हूँ ...।

* * * * *

पीकी : (दर्दभरी विवरणात्मक ध्वनि में)...उस रोज़ मैया पूरी तरह से टूट चुकी थी। फिर भी धीरज धरकर उसने बातें कीं।...अपनी बेबसी, लाचारी वह किसी के साथ भी बाँट नहीं सकी।... ख़ैर, जो भी होना था, वह सब बख़्त के मुताबिक हो ही गया ...!

* * * * *

चोकला : अरे लोकी...आओ बिटिया इधर...देख तुम लोगों के लिए क्या लाया हूँ?...

बंगारी : (अपने आप) पापी है, शैतान कहीं का,...अपने ही जिगर के टुकड़ों का सौदा करता है। ...पत्थर दिलवाला...न जाने क्या-क्या होने वाला बाक़ी है...बेशर्म कहीं का, बच्चों की खुशामदी कर रहा है।...अरे ओ लोकी, पीकी, वह सब छोड़कर इधर आओ, तुम लोगों के लिए रोटी बनायी है। ... आकर खा लो।

चोकला : अरी ओ बंगारी, तू अंदर चल थोड़ी देर के लिए।...अब से आगे चलकर मेरी बिटिया रूखी-सूखी खाने वाली नहीं है। ...चावल

खाएगी चावल, ...मिठाई खाएगी।...वह बदनसीबी सिर्फ़ हम लोगों की है।

बंगारी : चुप रे...बड़ा आ गया मरद घरबार, संभालने वाला...बेकार पीकर मंडराते रहते हो, तुम्हें क्या पता कि कमाना क्या है?...चावल की बात करता है, चावल की...धत् तेरी...।

चोकला : बंद रक्खो तेरा मुँह, चुड़ैल कहीं की...बच्चों की फ़िकर मुझे भी है।... आगे चलकर भीमी भी रानी जैसी रहती है।...अब वह मेरीयम्मा के साथ जाने वाली है। हमारी लोकी है न, उसके साथ यह भी जाकर राज करेगी। खूब खाएगी, मौज करेगी।...वहाँ बच्चों की खूब देखरेख करते हैं, पढ़ाते भी हैं।...

भीमी : नहीं, बिलकुल नहीं...मैं कहीं जाने वाली नहीं हूँ। ... माई, मुझे कहीं नहीं भेजना...मैं तेरे साथ रहती हूँ ... मैं कहीं भी नहीं जाने वाली हूँ। ...

बंगारी : नहीं बिटिया, तुम्हें कुछ नहीं होगा।...मैं तुम्हें कहीं भी भेजने नहीं देती।...आखिर हमारे बस में है ही क्या? रोओ मत, चुप रहो।

भीमी : अब्बा ने मुझे मेरीयम्मा को बेच दिया है।...देख अम्मी...(रोती है)

बंगारी : नहीं मेरी बिटिया, तुम कहीं नहीं जाओगी।...मेरे पल्ले ही रहोगी। रोओ मत...(घृणाभरी आवाज़ में) शैतान कहीं का...बेशरम...अपने ही जिगर के टुकड़ों को बेचकर शराब पीता है। पापी है पापी...।

चोकला : बंगारी, ख़बरदार जो बीच में बोली तो...मेरी भी बात सुना करो... इन लड़कियों को लेकर करोगी क्या?...बड़ी होने तक इनकी देखरेख करनी चाहिए, पालना-पोसना पड़ता है। इसके ऊपर इनकी शादी भी करनी होगी। (लंबी सांस भरते हुए) अगर दहेज़ माँगेंगे तो पैसे कहाँ से जुटाती हो?...तू तो सिरफ़ लड़कियों को ही जनने वाली मशीन जैसी बन गयी हो।...यह हम ग़रीबों के बस में थोड़ा ही है।

बंगारी : इसका मतलब है अपने ही बच्चों को दूसरों के हाथ बेच देना। ज़बरदस्त इस तरह बाहर की गयी बच्चों की हालत क्या होगी, पता है तुम्हें?... हमारे जीते जी बच्चे लावारिस बन जाएँगे। ...मैं यह सब देख नहीं सकती। जिस ऊपर वाले ने जनम दिया है वही देखरेख भी कर लेगा। ...मैं अपने बच्चों से कभी जुदा नहीं हो पाती।

चोकला : चुप रह बे, आगे एक बात भी मुँह से मत निकालना।...मेरा पूरा प्लान बिगाड़ देती हो। ...वह लड़की बाहर गयी तो समझो उतना बोझ

कम हो गया। कम से कम बाक़ी लोग थोड़ा पेट भर खा सकते हैं।...

बंगारी : हाय दैया, अब क्या करूँ?...किसके दरवाज़े खटखटाऊँ बचाने के लिए?...भैया, आप कुछ समझाइए मेरे मरद को...भाभी, आप कुछ कहिए इससे चुप रहने के लिए...लाचार बन गयी हूँ। पेट में बच्चा है, ...लेकिन मनमाना बोलता है, जीभर मारती है,...ओ बिटिया, माफ़ कर दे इस अभागिन माँ को।...कुछ कर नहीं पा रही हूँ।...

* * * * *

पीकी : माँ ... मेरी माँ पंद्रह दिन तक बिस्तर पर पड़ी हुई थी...भीमी की याद लगातार सता रही थी। उसे कैसे भूल पाती...कभी कभार अपने साथ ही बोला करती थी। सपनों के बीच खो जाती थी और जाकर बड़बड़ाती रहती थी।...एक तरह से पागल बन गयी थी।...

* * * * *

बंगारी : मारो मत...कहाँ हो मेरी बिटिया...कैसे हो...लोकी, भीमी, इधर आओ न...दीवाली का त्योहार है। बड़ी बहन पीकी हाथ में दीया पकड़ी हुई है। तुम सब उसके साथ हो जाओ। ...कितना सुंदर दिख रहे हैं बच्चे, मेरे बच्चे...।

चोकला : अरे ए बंगारी, क्या बक-बक कर रही हो...पागल बन गयी हो क्या?... भीमी, लोकी ...कहाँ गुम हो गये सब?

बंगारी : अब क्या चिल्लाते हो?...सब तेरी ही करतूत है। ...मैं तुझे छोड़ने वाली नहीं हूँ।...कभी नहीं छोड़ूँगी।...

* * * * *

पीकी : भीमी के जाने के बाद अम्मी बिलकुल पागल बन गयी थी। भीमी को बेचने से जो पैसे मिले थे, उससे घर के लिए एक बोरा दाना खरीद लाया था बस। बाकी सारे पैसे द्यामगा के शराबख़ाने के भीतर बोतलों में धंस गये। अब्बा की जेब फिर से खाली हो गयी थी।... इसी बीच अम्मी के भी नौ महीने पूरे हो चुके थे।...पेट के दर्द से तड़प रही थी। दो बेटियों को खोने के दु:ख से जिंदा लाश बन गयी थी...उसका ब्लड प्रेशर बढ़ गया था।...बड़ी बुरी हालत थी उसकी।

* * * * *

(दृश्य परिवर्तन)

(छोटे बच्चे के रोने की आवाज़)

केंचज्जी : थत् तेरी, जब बच्चों की देखरेख नहीं कर पाता, आख़िर तेरे लिए बच्चे क्यों?...कहीं चलकर डूब मर जा। सुना है कि सरकारी दवाख़ाने में कोई आपरेशन करते हैं जिससे बच्चे नहीं होते।...

चोकला : वह ठीक है, लेकिन बाद की बात बताओ, माई...क्या हुआ है?...

केंचज्जी : होता क्या...फिर लड़की पैदा हुई है।

चोकला : थत् तेरी, फिर लड़की...लड़का एक ही हैं, उसको साथ देने के लिए और एक लड़का होगा ऐसा सोचता था माई मैंने।...

केंचज्जी : छोड़, उसमें क्या है, ...आख़िर उमर क्या है तेरी...? अब नहीं तो अगली बार लड़का जरूर पैदा होगा। फ़िकर किस बात की?...

चोकला : वह कैसे बता सकेगी माई, ...आगे भी लड़की हो जाए तो बड़ी मुसीबत होगी।

केंचज्जी : छोड़ो भाई, औरत जैसे क्यों रोने लगते हो? मरद हो तो दुनियादारी समझ लो।...हमारा अपना क्या होता है,...वहाँ उस काले मुँह की बड़ी देवी माँ जो है, सबकुछ उसके जी के मुताबिक होता है।...हमारे तांडे में जो कुछ चलता है, वह सब उसकी इच्छा है, ...हम कौन होते हैं बनाने वाले, बिगाड़ने वाले?...

चोकला : मैं भी क्या करूँ माई, ...मैंने भी काफ़ी मन्नत माँगी थी। पिछले अमावस के दिन, अगरबत्ती जलाकर, हाथ जोड़कर उसके सामने खड़े होकर माँगा था कि औरत के पेट में बच्चा है और इस बार ज़रूर लड़का ही होना चाहिए।...अगर लड़का होगा तो दो मुर्गे चढ़ाने की मन्नत भी माँगी थी, ...फिर भी नसीब में लड़की ही हुई है, क्या करें?...हम जैसे ग़रीब लोगों की ओर उसकी नज़र नहीं पड़ी। ...बेचारे हम क्या कर सकते?...

* * * * *

पीकी : अब्बा की जेब खाली होते ही न जाने उसकी सोच कहाँ-कहाँ पहुँचती थी। ...और एक लड़की के पैदा होने की बात सुनते ही उसके सोचने की लहर और किसी मंज़िल पर आ रुकी थी। ...अम्मी अभी जच्चा थी, फिर भी अब्बा खुद एक पैसा कमाने के बारे में नहीं सोचता

था। बातों से ही धक्का देकर अम्मी को ही कमाकर लाने के लिए भेजता था।...बेचारी अम्मी...

* * * * *

चोकला : अरी, कितने दिन तक सोकर पड़ी रहती हो?...जंगल जाकर लकड़ी लाओ।

बंगारी : बच्ची का अभी तक महीना भी नहीं हुआ है...तो भी...

चोकला : तो क्या...मर जाएगी बच्ची, कुछ नहीं होगा, चल पैदा होते ही कहने लगा कि मैं इस मनहूस बच्ची के साथ पिंड छुड़ा देना चाहिए।...हम जो हैं, हमारे लिए खाने के लिए काफी नहीं है...।

बंगारी : तुम फ़िकर मत करो।...मैं कमाकर इन सबका पेट पालती हूँ। ...बड़ा आ गया फ़िकर करने वाला...।

चोकला : बात बात पर यह मत कहा करो कि तू ही कमाती है। आख़िर तेरा कमाना किस मुँह के लिए काफ़ी बनता है...? हर शाम को पिये बिना मैं नहीं रह पाता। इस मनहूस के जन्मने से मेरे बोतल की हालत बुरी बन गयी। ...लोकी और भीमी को मेरीयम्मा ले चली, बच गये, चार पैसे भी मिले। ...देख, अब और एक पिल्ली पैदा हुई है, ...हालात ऐसी है तो क्यों न पीकी को भी मेरीयम्मा के साथ भेज दें।...

बंगारी : थत् तेरी, क्या सोच रहे हो तुम?...आग लगे तेरी सोच पर...अपने ही जनमें बच्चों को बेचकर पीने की लत पूरा करने वाले तुम भी एक इन्सान हो?...धब्बा है तू एक धब्बा...बच्चों को खोकर दिन-रात तड़प रही हूँ, ...मेरे बच्चे न जाने कैसी-कैसी मुसीबतें झेल रहे हैं?...अगर तुम पीकी के बारे में सोचोगे तो मैं कभी चुप नहीं रह सकती। ...हाय रे, क्या औरत का जन्म है?...धिक्कार है इसे...।

चोकला : चुप रह बे, मुँह मत बोल। मुझे पता है क्या करना। ...मेरे दिल में कुछ आया तो बस, करके ही दिखाता हूँ।...बीच में किसी के आने की ज़रूरत नहीं है।...समझी?

* * * * *

पीकी : अम्मी को फ़िकर थी कि कहीं जाकर यह शैतान मुझे भी मेरीयम्मा के हाथ बेच डालेगा। इसीलिए वह ज़बरदस्ती उठकर जंगल की ओर चली। लेकिन...मामला वहाँ और ही हो गया था। फॉरेस्टवालों ने कड़ा नियम जारी कर दिया था कि जंगल में लकड़ी काटना बिलकुल मना

है। ...बेचारी अम्मी खाली हाथ घर वापस आयी। ...अब्बा आग बबूला हो गया।

* * * * *

चोकला : क्या मतलब?...यह कैसे हो सकता है, झूठ बोल रही हो कि लकड़ी नहीं मिली।...

बंगारी : झूठ क्यों बोलूँ?...जंगल में लकड़ी काटने को मना कर दिया है सरकार ने। ...बंदूक पकड़कर सिपाही पहरे पर हैं। तांडे से लकड़ी काटने के लिए जितने लोग गये थे, सब बंदूक देखकर भाग आये वापस।... लगता है कि लकड़ी काटकर बेचना अब बंद होगा। ...

चोकला : तुम जैसे लोगों को बंदूक से उड़ा देना चाहिए था।

बंगारी : क्यों, जो कुछ बचा रहता है झोंपड़ी में, वह सब बेचकर पीकर मज़ा उड़ाने को सोचता था क्या?...

चोकला : क्यों री, तेरे बाप के घर से सब लायी थी क्या?...तो आगे क्या होगा सेवाभाऊ?...

बंगारी : और क्या होगा?...हम दोनों ज़मींदारों के यहाँ जाकर ज़मीन का काम करेंगे। कुली का काम करेंगे।...जो कुछ मिलता है, उससे कुछ न कुछ खाकर दिन बिताएँगे।

चोकला : क्या बक रही हो?...मैं जाकर कुली का काम करूँ, ... वह भी जाकर तेरे साथ। ...धत्, यह हमारे कौम के लिए ही शरम की बात है। ...क्या समझ रक्खा है मुझको। बिना खाकर मर जाऊँगा, लेकिन कुली का काम कभी नहीं करता।

बंगारी : कहीं भी तबाह हो जा। तेरी मर्ज़ी। ...कहाँ का क़ायदा है कि मरद होने पर कुली का काम नहीं करना चाहिए। तांडे के और मरद लोग क्या कुली बनकर काम नहीं करते?...मुझे इसकी फ़िकर नहीं है। बच्चों को मैंने जन्म दिया है। मैं ही उनको पालूँगी। ...बच्चे मुझ पर बोझ थोड़े ही हैं।

चोकला : औरों के बारे में मुझे क्यों बताती है? मैं नहीं सुनता। ...आख़िर मेरी तो ऊपर की कमाई है। ...और देखो तो इस गाँव में करने के लिए काम भी है कहाँ? निकम्मे लोग काम ढूँढ़ते शहर जाया करते हैं। ...चल, भूख लगी है, कुछ खाकर बाहर चलूँ।

बंगारी : तो चल अंदर।...

चोकला : (खाना खाकर पानी पीता है) तुम कुछ भी कहो बंगारी, ...यह तांडा बिगड़ गया है अब। हम जैसे लोग अब यहाँ नहीं रह सकते। ...लोग खुद भी बिगड़ते हैं और दूसरों को भी बिगाड़ते हैं। अपने आप तक रह नहीं सकते। जो नेक लोग काम करने पर जाना चाहते हैं, उन लोगों को भी रोक लेते हैं। निकम्मों की टोली में भरती करवा लेते हैं।...मैं इन सबसे तंग आ चुका हूं।...

* * * * *

पीकी : अब्बा कुछ बदल गया था या बदलने का बहाना कर रहा था, अम्मी को इसका बिलकुल कुछ भी पता नहीं लगा।...लेकिन अंदर ही अंदर और एक चाल चल रही थी। लेकिन यह राज़ समझ में आने तक हालात काबू के बाहर हो चुका था।

* * * * *

चोकला : हाय रे, उस ऊपरवाले ने घर भर बच्चे दे दिये, लेकिन पालने-पोसने का रास्ता नहीं दिखाया। बड़ी मुसीबत में डाल दिया।...पता नहीं हमीं को इतनी ग़रीबी क्यों दे दी?

बंगारी : मेरी क़सम, ऐसा क्यों बोलते हो, जो कुछ है उसे ही बांटकर दिन काटेंगे। जो है, उसी में खुश रहेंगे।

चोकला : अरे, मैंने आज तक कुछ नहीं किया, कोई अच्छा काम नहीं किया। ...पानी हूँ, तुम लोगों को बहुत कुछ सदा दिया मैंने। ...

बंगारी : पागल बन गये हो क्या?...सोचो मत, तुम मरद लोग हो। कमाने या न कमाने में फ़रक नहीं होगा। मेहनत करने के लिए हम लोग हैं न ...।

चोकला : यह बात नहीं है बंगारू...परिवार बढ़ रहा है, जितनी भी कमाई हो तो पापी पेट भरने के लिए काफ़ी नहीं है। ...हाँ, वैसे तो एक बात याद आ रही है। बंगारी, हमारी लोकी और भीमी रानी जैसी दिन बिता रही हैं। ...महल में जी रही हैं।

बंगारी : क्या कुछ ख़बर मिली? कैसी हैं वे?...

चोकला : हाँ, दो दिन पहले हमारे तांडे का जोगीरा भाई उनके यहाँ गया था। उसके पास आकर दोनों ने हालत पूछकर हम लोगों की हालत के बारे में भी पूछा, ऐसा बताया जोगीरा ने।...

बंगारी : हाय मेरी बिटियाँ, कैसे होंगी वे। इस अम्मी की याद आ रही है उन्हें... चल एक बार जाकर उनसे मिलकर आएँ। अब कहाँ हैं मेरी बिटियाँ? हम भी चैन से रह सकेंगे।...

चोकला : पगली, तेरे कहने पर एकदम ऐसे कहाँ जा सकते। जोगीरा भैया ने हमारी बेटियों को कहाँ, जिस मुहल्ले में देखा, वह यहाँ से कितना दूर है, इन सबका पता करना होगा।...

बंगारी : जो चाहे सो कर लो। लेकिन अपनी बच्चियों को जल्दी देखने को दिल कर रहा है।...

चोकला : यह औरत जात ही ऐसी है।...सबकुछ एकदम हो जाना चाहिए।...ठीक है, फ़िकर करो मत। कल जब जोगीरा से मिलूँगा तो बात कर लेंगे।...

* * * * *

पीकी : लेकिन जोगीरा तो ज़रूर आया, मक़सद कुछ और ही था। ...अम्मी ने जितने सपने देखे थे, सब चूर-चूर हो गये। अब्बा की खुशामदीवाली बातों से अम्मी छल गयी थी। धोखा खा चुकी थी। उसकी मीठी बातों के पीछे जो कडवा ज़हर था, उसका अंदाजा अम्मी को नहीं हुआ। घर पर एक नयी बच्ची आयी थी; इसीलिए बदला चुकाने के लिए अब्बा ने मुझे घर से बाहर डालने की साजिश रची थी। ...अम्मी खूब रोयी, छाती पीटने लगी, रास्ते में खड़ी हो गयी, विनती की ...लेकिन कोई असर अब्बा पर नहीं पड़ा। वह बिलकुल चट्टान बन गया था। रहम क्या होता है, इसके लिए अब्बा के दिल में कोई जगह ही नहीं थी।... दीवाली के लिए मुझे जो कपड़े लाये गये थे, उन्हें पकड़कर अम्मी खूब रोने लगी।...लेकिन...लेकिन ... जोगीरा और मेरीयम्मा ने कसाईख़ाने के लिए भेजी जाने वाली गाय की तरह मुझे वहाँ से घसीटकर ले चले।...(रोटी है)

मुझे लगा कि कोई ज़बरदस्ती अम्मी के हाथों से मुझे खींचकर ले जा रहे हैं, दिल का रिश्ता टूट जाने के डर से मैं चीख उठी। ...मेरे रोने का कोई मोल नहीं था...मेरी मदद के लिए कोई आगे नहीं आया।...आख़िर माँ भी बेबस खड़ी रही।

* * * * *

बंगारी : अरी मेरी बिटिया, ...दीवाली के दिन हाथ में दीया पकड़कर तुमको गाते देखने के लिए जी तरस रहा था।...पीकी, क्या तुम चली जाओगी

बिटिया, मैं अब किनके लिए जीऊँ...पापी हूँ मैं, तू बच्चों को सहारा न दे सकी। ...पापी हूँ मैं ...(सिर पीट-पीटकर रोने लगती है)... अरे, धोखेबाज़, मेरे अपने बच्चों को काट-काट कर बेचने वाले दरिंदे, तुम हमेशा के लिए मिट जाओगे। कोई तुम्हें नहीं बचाएगा। मिट्टी में मिल जाओ।...

* * * * *

पीकी : अम्मी के मुँह से निकले ये शब्द अभी मेरे कान में गूँज रहे हैं। जिगर के अंदर ऐसा कोई दर्द उमड़कर बाहर आने पर तुला हुआ रहता है जिसका बयान नहीं कर सकती।...अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ। मां का धुंधला चेहरा कभी आँखों के सामने आता है...इतने दिनों के बाद वह खुद सामने आकर खड़ी होगी तो पता नहीं उसे पहचान पाऊँगी कि नहीं।...मेरा भाई, बिलकुल नासमझ था, यों ही पड़ा रहता था, ...छोटी बहन, तब तो वह अम्मी के आंचल में छुपी हुई थी।... ग़रीबी को बहाना बनाकर अम्मी की कमाई में मौज़ करने वाला अब्बा, ...यह अब्बा हम लड़कियों के जन्मते ही थोड़ा ज़हर देकर या गला घोंटकर...।

ध्वनि 1 : ए, पीकी एक ग्लास की सफाई के लिए इतनी देर क्यों लगा रही हो? क्या ये तेरा बाप का घर समझ रही हो क्या? बेवकूफ लड़की। आ इधर।

ध्वनि 2 : मेरा मोजे और शू तैयार करो।

ध्वनि 3 : ए पीकी, कार की सफाई हो गई?

ध्वनि 4 : पीकी मेरा ड्रेस धोकर इस्त्री किया क्या। कॉलेज में मेरा डांस है।

ध्वनि 1 : बदमाश कहीं की। ऐसे ही चुप खड़ी हो जाती है। काम कौन तेरा बाप करेगा।

पीकी : ये मेरी जिंदगी है। जो मुझे खरीदा है वो मेरा मालिक है। उनकी कार की सफाई, कॉफी पिलाना, उनका कोट तैयार रखना, बूट पालिश करके चमकाना। मालकिन की मैचिंग साड़ी, चूड़ियाँ, चप्पल, कुमकुम, पिन तक लाके देना। उनका बेटा मेरे उम्र का ही है। उसकी छेड़छाड़ी सहन करना और उसका काम करना। ऐसी मेरी शर्मनाक जिंदगी है। सपने टूट कर बिखर गए हैं। यही मेरी जिंदगी है।

ध्वनि 2 : ए गधी कहीं की, कहाँ है मेरे मोजे।

पीकी : यहीं टी.वी. पर रखी है मालिक।

ध्वनि 3 : कार की सफाई हो गई।

पीकी : नहीं, कम ज्यादा था, अभी कर लेती हूँ...

ध्वनि 2 : क्या कहा, काम ज्यादा था तेरे लिए...? पटरानी हो क्या, ...अरे भाई, चलो, इसके लिए एक पलंग लाओ, सोएगी आराम से...पैसे देकर तुम्हें खरीदा है हमने...यहाँ आराम से समय नहीं गंवा सकती, समझी। ...

ध्वनि 1 : आख़िर क्या काम रहता है तुम्हें करने के लिए...चल, छोटी बिटिया के कपड़े हैं, आइरन कर...।

पीकी : ठीक है मालकिन, अभी चली।...

ध्वनि 2 : देखो, रौब जमाती चलती है।

ध्वनि 4 : आओ महारानी आओ, अब फुरसत मिली तुम्हें...सिर के बल चलने लगी है...तीन-तीन बार फुकट खा खाकर पेट पालने के लिए ही फुरसत नहीं है।...

पीकी : अभी आई मांजी, ...लो, अभी आई...।

ध्वनि 1 : बड़े घर का खाना इन निकम्मों को ऐसा बना देता है।...

* * * * *

पीकी : दीवाली के दिन हमारे तांडे की लड़कियों के जैसे मैंने हाथ में दिये नहीं पकड़ा। सेवाभाऊ के मंदिर के सामने जी भर नाच न सकी।...हर रोज़ पीकर अम्मी को सतानेवाले शैतान बाप से उसे छुटकारा नहीं दिला सकी। ...पियक्कड़ बाप को सबक़ सिखा न सकी। ...इस घर के पढ़ते हुए बच्चों को देखती हूँ तो पढ़ने के लिए मेरा भी जी मचलता है।...लगता है खूब पढ़कर मुझे भी आगे कुछ बनना है,...अम्मी को, भाई-बहनों को...लेकिन...लेकिन...क्या कर सकती...कब की बिक चुकी हूँ...हम बिकी हुई लड़कियों का नसीब ही खोटा है... सपनों को पैरों तले कुचलकर बेबसी से जीते हैं...सिर्फ़ जीते हैं बस...।

* * * * *

(समाप्त)

'प्रेतवन' की कथावस्तु में प्रेत किसी न किसी घटना से त्रस्त होकर आत्महत्या की शरण में चले गए हैं। प्रेतों के संवादों के जरिए नाटक के मूल उद्देश्य को सामने लाने में शांता नायक की कलात्मकता सामने आयी है। प्रेतवन नाटक की तीन घटनाएँ – 'भ्रूण हत्या', 'बांझ होने की स्थिति से उत्पन्न उत्पीड़न', 'कानून के प्रति सचेतनता' आदि से वस्तु विषय का परिचय कराना नाटककार का उद्देश्य रहा है। माँ की ममता का कोई मूल्य नहीं, आज के युग का भयानक सत्य बनकर दहाड़ता हुआ नजर आता है। परंपरा से आये मानदंडों को तोड़ने का आग्रह नाटककार की संवेदना का महत्वपूर्ण पक्ष रहा है।

शांता नायक ने अपने दूसरे नाटक 'तिम्मजी की मुर्गी' में बाजारवाद या भूमडंलीकरण के चलते गाँवों की सामान्य जनता जो पीड़ा भोग रही है, अपनी वस्तुओं के न बिकने से, उनकी रोजी रोटी छिनने का दंश झेल रहे–यथार्थ से बना नाटक है। तिम्मजी अपनी मुर्गियों को पालने, बेचने से खुश थी पर गाँव में शहर की हवा लगने से लोग विदेश से कम दाम में मिलने वाली मुर्गियों को खाने लगे। इससे गाँव के उद्योग बंद होने लगे। यह तिम्मजी की समस्या मात्र नहीं है, पूरे गांव की समस्या बनी है। नाटककार ने भूमडंलीकरण के कारण गाँवों की बिगड़ती स्थिति को रेखांकित किया है जो प्रगति के नाम पर लूट का तांडव मचा रही है।

'मैं कब की बिक चुकी हूँ ...' नाटक की केंद्रीय संवेदना में गरीबी के कारण बने यथार्थ को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करना रहा है। शांता नायक ने गरीबी से बने उत्पात को, पिता के निकम्मेपन एवं शराब के लिए तीनों पुत्रियों का सौदा करना और उन्हें बेचना, माँ की संघर्षशीलता को एवं पति द्वारा पुत्रियों को न बचा पाने की असमर्थता को कटु सत्य के रूप में प्रस्तुत किया है जो शांता नायक जैसे गरीबी की थपेड़े खाकर बने नाटककार के लिए मात्र संभव है।



एन. शांतनायक का जन्म शिरगानहल्ली तांडा में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहीं गाँव की पाठशाला में हुई। बी.ए. कर्नाटक कॉलेज, धारवाड़ से तथा एम.ए., पीएच.डी., की पढ़ाई कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ से हुई। उनका सृजनात्मक लेखन कार्य जब वे बारहवीं में थे तभी से गति पकड़ा और आज तक चल रहा है। उनके द्वारा रचित **दो कहानी संग्रह**– गुड्डज्ज, कोय मतु धोत्र, **तीन कविता संग्रह** – मीनु मतु हुडुगी, लमाणी, बंजारा (आत्मकथन काव्य)। **तीन उपन्यास**– कत्तलु करगुव मुन्न, गोरमाटी, मल्हाण तथा दो नाटक वेरालु, नम्मोलगिन पात्रगलु।

संप्रति– प्रो. एन. शांतनायक, प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग
श्रीविजयनगर कृष्णदेवराय विश्वविद्यालय, बल्लारी, कर्नाटक।

aadi PUBLICATIONS

आदि पब्लिकेशन्स

एफ-11, एस.एस. टॉवर, धामानी स्ट्रीट,
चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003 (राज.)
फोनः 0141-231 1900, 94144 43132
ई-मेल-aadipublications@gmail.com

ISBN: 978-81-952501-7-2

9 788195 250172

₹ 125.00